



ISSN (O): 2320-5407  
ISSN (P): 3107-4928

Journal Homepage: - [www.journalijar.com](http://www.journalijar.com)

## INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH (IJAR)

Article DOI: 10.21474/IJAR01/23055  
DOI URL: <http://dx.doi.org/10.21474/IJAR01/23055>



INTERNATIONAL JOURNAL OF  
ADVANCED RESEARCH (IJAR)  
ISSN 2320-5407  
Journal Homepage: <http://www.journalijar.com>  
Journal ID: 10.21474/IJAR01

### CONFERENCE PAPER

## उत्तर प्रदेश की क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में संगीत की भूमिका: एक आर्थिक-सांस्कृतिक विश्लेषण

Rajan Bharti

1. Research Scholar Department of Fine Art & Music Deen Dayal Upadhyay Gorakhpur University, Gorakhpur.

#### Manuscript Info

##### Manuscript History

Received: 04 January 2026

Final Accepted: 08 February 2026

Published: March 2026

##### Key words:-

क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था, लोक एवं शास्त्रीय संगीत,  
सांस्कृतिक उद्योग, संगीत एवं  
रोजगारसांस्कृतिक पर्यटन।

#### Abstract

उत्तर प्रदेश, भारत का एक ऐसा राज्य है जो न केवल अपनी जनसंख्या और कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था के लिए जाना जाता है बल्कि यह सांस्कृतिक एवं सांगीतिक विविधता का अद्भुत संगम भी है। उत्तर प्रदेश अपनी समृद्ध लोक-संगीत परंपराओं जैसे रामलीला, कजरी, चैती, बिरहा, फगुआ तथा विविध संस्कार-गीतों को आज भी जीवंत बनाए रखने के साथ-साथ हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रमुख घरानों बनारस, लखनऊ, आगरा, रामपुर-सहसवान एवं किराना की जन्मभूमि होने का गौरव भी प्राप्त करता है। इन परंपराओं के अतिरिक्त, इस प्रदेश ने देश के विभिन्न राज्यों की लोक-सांस्कृतिक धाराओं के तत्वों को आत्मसात कर उन्हें अपनी सांस्कृतिक संरचना में समाहित करने की उल्लेखनीय क्षमता प्रदर्शित की है, जिसके परिणामस्वरूप यहाँ का सांस्कृतिक परिदृश्य और अधिक समृद्ध एवं बहुवर्णीय स्वरूप में विकसित हुआ है। प्रस्तुत शोध पत्र उत्तर प्रदेश की क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में संगीत की भूमिका का एक बहुआयामी आर्थिक-सांस्कृतिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। प्रायः संगीत को केवल एक कला या मनोरंजन का साधन मान लिया जाता है, किंतु यह शोध यह उजागर करता है कि संगीत अपने रचनात्मक एवं प्रायोगिक आयामों के कारण एक सशक्त आर्थिक चालक भी है। यह अध्ययन इस बात का विश्लेषण करता है कि किस प्रकार संगीत की इन जीवंत परंपराओं ने राज्य में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार के विपुल अवसर सृजित किए हैं।

"© 2026 by the Author(s). Published by IJAR under CC BY 4.0. Unrestricted use allowed with credit to the author."

उक्त संदर्भ में सहभागिता कलाकारों एवं वादकों तक सीमित नहीं रही है, अपितु वाद्य निर्माण (जैसे बांसुरी, तबला, ढोलक), ध्वनि रिकॉर्डिंग स्टूडियो, संगीत प्रकाशन तथा भव्य आयोजन एवं प्रबंधन (इवेंट मैनेजमेंट) से जुड़ा एक विशाल उद्योग खड़ा हो गया है।

**Corresponding Author:-**Rajan Bharti

**Address:-**Research Scholar Department of Fine Art & Music Deen Dayal Upadhyay Gorakhpur University, Gorakhpur.

वाराणसी, आगरा, लखनऊ, मेरठ, गोरखपुर, प्रयागराज जैसे शहरों में आयोजित होने वाले वार्षिक संगीत महोत्सव एवं मेले स्थानीय पर्यटन, आतिथ्य (होटल एवं रेस्टोरेंट), यातायात एवं हस्तशिल्प उद्योग को बढ़ावा देकर आय संवर्धन में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। अतः स्पष्ट है कि संगीत की रचनात्मक परंपराएँ सांस्कृतिक संरक्षण के साथ-साथ सांस्कृतिक आयोजनों, पर्यटन, कला-प्रशिक्षण एवं अन्य सहायक आर्थिक गतिविधियों के विस्तार द्वारा क्षेत्रीय विकास को सशक्त आधार प्रदान करती हैं। यह शोध पत्र संगीत को महज एक कला न मानकर उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था के एक सतत एवं महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में प्रस्तुत करने का एक प्रयास है।

### Introduction:-

भारत की विविधतापूर्ण सांस्कृतिक धरोहर में उत्तर प्रदेश का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय है। यह राज्य प्राचीन काल में कोशल, काशी, पांचाल, वत्स और कुरु जैसी जनपदों की भूमि रहा। मध्य काल में यह अवध, दोआब, ब्रज, रोहिलखंड एवं बुंदेलखंड के रूप में विभाजित रहा। आधुनिक काल में स्वतंत्रता से पूर्व यह 'संयुक्त प्रांत आगरा व अवध' के नाम से जाना जाता था तथा 1950 में इसका नाम 'उत्तर प्रदेश' रखा गया। नाम में परिवर्तन होते रहने के बावजूद, उत्तर प्रदेश संगीत, कला एवं साहित्य की समृद्ध परंपराओं का केंद्र बिंदु रहा है। यहाँ की सांगीतिक परंपराएँ धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन से गहराई से जुड़ी रही हैं। उत्तर प्रदेश में संगीत केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं है, अपितु यह सामाजिक जीवन की संरचना का अभिन्न अंग है। यहाँ विवाह, त्यौहार, धार्मिक अनुष्ठानों, सामुदायिक समारोह एवं जन्म से मरण तक की जीवन यात्रा में संगीत की अहम भूमिका होती है। इस कारण संगीत से जुड़ी गतिविधियाँ स्थानीय स्तर पर आर्थिक अवसरों को भी जन्म देती हैं। वर्तमान समय में जब रचनात्मक उद्योग (ब्लॉगिंग, पटकनेजतल) को आर्थिक विकास का महत्वपूर्ण साधन माना जा रहा है, तो ऐसे परिदृश्य में संगीत की भूमिका का अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। उत्तर प्रदेश की क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में संगीत की भूमिका को समझना इसलिए आवश्यक हो जाता है क्योंकि यह क्षेत्र सांस्कृतिक पर्यटन, लोक कलाओं, संगीत समारोहों, वाद्य निर्माण स्थलों एवं क्षेत्रीय उद्योगों के माध्यम से आर्थिक विकास की नई संभावनाएँ प्रस्तुत करता है।

### उत्तर प्रदेश की संगीत परंपराएँ:-

भारतीय संगीत की समृद्ध एवं विविध सांगीतिक परंपराओं के संरक्षण तथा विकास में उत्तर प्रदेश का विशेष स्थान रहा है। यहाँ की सांस्कृतिक विरासत में शास्त्रीय संगीत, उपशास्त्रीय संगीत व लोक संगीत की विविध धाराएँ एक साथ विकसित हुई हैं। यह राज्य न केवल गायन व वादन शैलियों का जन्मस्थल रहा है, बल्कि समयानुसार इन परंपराओं को संरक्षित एवं विकसित करने का भी महत्वपूर्ण कार्य करता रहा है। यहाँ की संगीत परंपराएँ राज्य की सामाजिक संरचना, धार्मिक आस्थाओं, लोकजीवन तथा सांस्कृतिक वातावरण के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई हैं। उत्तर प्रदेश में शास्त्रीय संगीत की परंपरा दीर्घकाल से समृद्ध एवं प्रतिष्ठित रही है। शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में उत्तर प्रदेश में स्थापित गायन तथा वादन के घराने इस प्रदेश को अन्य प्रदेशों से अलग करते हैं क्योंकि यहाँ शास्त्रीय संगीत के मुख्य घराने बनारस, लखनऊ, आगरा, किराना, रामपुर सहस्रवान, इटावा, फर्रुखाबाद, अजराड़ा तथा इन सभी घरानों की छोटी-छोटी शाखाएँ भी विकसित हैं। जैसे-बनारस से निकला घराना हरिहरपुर घराना जो आजमगढ़ जिले में पड़ता है इस प्रकार शास्त्रीय संगीत की दृष्टि से उत्तर प्रदेश पूर्ण रूप से विकसित व समृद्ध की श्रेणी में आता है। ठुमरी, दादरा, कजरी, चैती और होरी जैसे उपशास्त्रीय संगीत विधाओं का विकास मुख्यतः उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक भूमि पर ही हुआ है।

इन शैलियों में संगीत एवं काव्य का अत्यंत मधुर समन्वय देखने को मिलता है, जो इन्हें विशिष्ट बनाता है। लोक संगीत की दृष्टि से भी उत्तर प्रदेश अत्यंत समृद्ध राज्य है। यहाँ के विभिन्न क्षेत्रों में स्थानीय जीवन, परम्पराओं और त्यौहारों से जुड़े अनेकों लोकगीत प्रचलित हैं। पूर्वी उत्तर प्रदेश में भोजपुरी लोकगीतों की समृद्ध परंपरा देखने को मिलती है, जिनमें सोहर, बिरहा, कजरी, चैती, चैता, चौताल, उलारा, किसानी, पूर्वी, निर्गुन, पचरा और फगुआ जैसे गीत के साथ जन्म से मरण तक की जीवन यात्रा को गीत के माध्यम से व्यक्त किया जाता है तथा फारूहाई, धोबिया, नटवरी, धीवर, काठघोड़वा लोक नृत्य अत्यंत लोकप्रिय हैं। यहाँ के लोक गीत व नृत्य ग्रामीण जीवन, सामाजिक संबंधों और लोक आस्थाओं को अभिव्यक्त करते हैं। बुंदेलखंड क्षेत्र में आल्हा और राई जैसे वीर रस और लोकनृत्य से जुड़े गीत प्रमुख हैं ब्रज क्षेत्र में रासलीला और होरी से संबंधित भक्ति गीतों की विशेष परंपरा है, जो कृष्ण भक्ति से गहराई से जुड़ी हुई है। धार्मिक और आध्यात्मिक परंपराओं ने भी उत्तर प्रदेश के संगीत को समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वाराणसी, मथुरा

और अयोध्या जैसे धार्मिक नगरों में भक्ति संगीत की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। भजन, कीर्तन और रामचरितमानस के पाठ के साथ गाए जाने वाले संगीत रूप आज भी धार्मिक आयोजनों का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। सूफी कवियों की परंपरा से जुड़े निर्गुण भजन व कव्वाली संगीत का भी उत्तर प्रदेश में विशेष स्थान रहा है, विशेषकर दरगाहों और धार्मिक मेलों में इसका आयोजन होता रहा है। समय के साथ उत्तर प्रदेश की संगीत परंपराओं में आधुनिकता का भी प्रभाव दिखाई देने लगा है। रेडियो, टेलीविजन के पश्चात डिजिटल मीडिया के विकास ने पारंपरिक संगीत को नए मंच प्रदान किए हैं। विशेष रूप से भोजपुरी संगीत उद्योग ने पिछले दो दशकों में उल्लेखनीय विस्तार किया है। इस उद्योग ने न केवल क्षेत्रीय कलाकारों को व्यापक पहचान दिलाई है, बल्कि संगीत के माध्यम से रोजगार और आय के नए अवसर भी उत्पन्न किए हैं। इस प्रकार उत्तर प्रदेश की संगीत परंपराएँ केवल सांस्कृतिक धरोहर ही नहीं हैं, बल्कि यह राज्य की सामाजिक और आर्थिक संरचना से भी गहराई से जुड़ी हुई हैं। यहाँ की विविध संगीत शैलियाँ समाज के विभिन्न वर्गों की भावनाओं, अनुभवों और जीवन मूल्यों को अभिव्यक्त करती हैं। साथ ही, ये परंपराएँ क्षेत्रीय पहचान को सुदृढ़ करने के साथ-साथ सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसलिए उत्तर प्रदेश की संगीत परंपराओं का अध्ययन न केवल सांस्कृतिक दृष्टि से बल्कि आर्थिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य से भी अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

#### उत्तर प्रदेश की क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में संगीत का योगदान:-

उत्तर प्रदेश की आर्थिक संरचना में संगीत की भूमिका को केवल मनोरंजन के परिप्रेक्ष्य में नहीं देखा जाना चाहिए। यहाँ की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर का यह अभिन्न अंग, रोजगार सृजन और आय के साधन के रूप में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। पारंपरिक लोकगीत हों या शास्त्रीय संगीत की शैलियाँ, ये न केवल कला का प्रदर्शन हैं बल्कि आर्थिक गतिविधियों के केंद्र भी हैं। वाद्ययंत्र निर्माण की कुटीर-उद्योग आधारित इकाइयाँ, संगीत शिक्षण संस्थान, और सांस्कृतिक उत्सवों का आयोजन स्थानीय अर्थव्यवस्था को सीधे तौर पर प्रभावित करता है। इस प्रकार, संगीत उत्तर प्रदेश में एक जीवंत आर्थिक परिदृश्य तैयार करने में सहायक है। आधुनिक अर्थशास्त्र में, रचनात्मक उद्योगों को विकास के एक शक्तिशाली इंजन के रूप में मान्यता मिली है। संगीत इस क्षेत्र का एक आधारभूत स्तंभ है, जो सांस्कृतिक मूल्यों को आर्थिक लाभ में परिवर्तित करता है। उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था में संगीत के योगदान का विश्लेषण करने से पता चलता है कि यह कला का वह माध्यम है जो परंपरा और आधुनिकता के बीच एक आर्थिक पुल का कार्य करता है। पर्यटन से लेकर डिजिटल मीडिया तक, संगीत की व्यापक उपस्थिति ने प्रदेश की आर्थिक विविधता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

#### रोजगार सृजन में संगीत की भूमिका:-

संगीत से संबंधित गतिविधियाँ अनेकों प्रकार के व्यवसायों एवं रोजगार के अवसरों को जन्म देती हैं। इस क्षेत्र में केवल कलाकार ही नहीं बल्कि विभिन्न तकनीकी व सहायक कार्यों से जुड़े लोग भी सम्मिलित होते हैं। उदाहरणस्वरूप जैसे कि संगीत शिक्षक, संगीत थेरपी, वाद्य यंत्रों के निर्माता, ध्वनि तकनीशियन, रिकॉर्डिंग विशेषज्ञ, मंच प्रबंधक, कार्यक्रम संयोजक तथा मीडिया से जुड़े कर्मी इस क्षेत्र में अपनी भूमिका निभाते हैं। उत्तर प्रदेश में सामाजिक और धार्मिक आयोजनों में संगीत का विशेष महत्व होता है। विवाह समारोह, उत्सव, मेलों और धार्मिक कार्यक्रमों में कलाकारों को प्रस्तुति देने के अवसर मिलते हैं। इन अवसरों से उन्हें आर्थिक लाभ प्राप्त होता है और उनकी आजीविका को आधार मिलता है। इसके साथ ही संगीत कार्यक्रमों के आयोजन से जुड़े अनेक सहायक व्यवसाय भी विकसित होते हैं, जैसे ध्वनि उपकरणों का प्रबंधन, मंच व्यवस्था और कार्यक्रम संचालन। इस प्रकार संगीत उद्योग रोजगार के विविध आयामों को विकसित करता है।

#### वाद्य निर्माण एवं मरम्मत उद्योग:-

उत्तर प्रदेश में पारंपरिक वाद्यों के निर्माण के साथ-साथ उनके रख-रखाव, सुधार तथा ध्वनि संतुलन से संबंधित एक महत्वपूर्ण कारीगरी परंपरा विकसित हुई है। भारतीय संगीत में प्रयुक्त अनेक वाद्य इस प्रदेश के विभिन्न नगरों और कस्बों में तैयार किए जाते हैं। इन स्थानों पर कारीगरों की विशेष दक्षता और अनुभव के कारण यह परंपरा आज भी सक्रिय रूप से बनी हुई है। तबला निर्माण की दृष्टि से अमरोहा, अयोध्या, लखनऊ, फर्रुखाबाद तथा वाराणसी महत्वपूर्ण स्थान माने जाते हैं। इसी प्रकार ढोलक तैयार करने के लिए अमरोहा, बहराइच, फर्रुखाबाद और पुरैना जैसे क्षेत्र प्रसिद्ध हैं। बांसुरी के निर्माण के लिए पीलीभीत विशेष पहचान रखता है, जबकि सितार बनाने की परंपरा लखनऊ, वाराणसी, गाजियाबाद और फतेहपुर में देखने को मिलती है। इसके अतिरिक्त मेरठ पीतल से बने विभिन्न वाद्यों के लिए जाना जाता है। इन क्षेत्रों में केवल वाद्यों की तैयारी ही नहीं होती, बल्कि उनके रख-रखाव और सुधार का कार्य

भी व्यापक रूप से किया जाता है। समय के साथ वाद्यों की ध्वनि और संरचना में परिवर्तन आ सकता है, इसलिए कलाकार समय-समय पर कारीगरों की सहायता से उन्हें ठीक करवाते हैं। इस प्रकार वाद्यों की देखभाल से संबंधित सेवाएँ भी कारीगरों के लिए आय का एक स्थायी स्रोत बन जाती हैं। इसके अतिरिक्त उत्तर प्रदेश के अनेक छोटे नगरों और कस्बों में भी वाद्यों की मरम्मत और रख-रखाव से संबंधित दुकानें तथा कार्यशालाएँ संचालित होती हैं। इन स्थानों पर स्थानीय कलाकार अपने वाद्यों की देखभाल और सुधार का कार्य करवाते हैं, जिससे कारीगरों को निरंतर कार्य मिलता रहता है। इस प्रकार उत्तर प्रदेश में वाद्य निर्माण एवं मरम्मत से जुड़ी यह परंपरा सांस्कृतिक संरक्षण, पारंपरिक कारीगरी और आर्थिक गतिविधियों के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करती है। यह क्षेत्र न केवल संगीत परंपराओं को बनाए रखने में सहायक है, बल्कि स्थानीय स्तर पर रोजगार और आय के अवसर भी प्रदान करता है।

### संगीत शिक्षा संस्थानों की भूमिका:-

संगीत शिक्षा संस्थान सांस्कृतिक संरक्षण तथा आर्थिक गतिविधियों दोनों की दृष्टि से महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उत्तर प्रदेश में अनेक विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों और निजी शिक्षण संस्थानों के माध्यम से संगीत की औपचारिक शिक्षा प्रदान की जाती है। लखनऊ स्थित भातखंडे संस्कृति विश्वविद्यालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय तथा दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय जैसे प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान इस दिशा में उल्लेखनीय योगदान दे रहे हैं। इन संस्थानों में विद्यार्थियों को संगीत की विभिन्न विधाओं का व्यवस्थित और शास्त्रीय प्रशिक्षण प्राप्त होता है। संगीत शिक्षा के परिणामस्वरूप अनेक विद्यार्थी इस क्षेत्र में व्यावसायिक रूप से सक्रिय हो जाते हैं। वे कलाकार, संगीत शिक्षक, संगीत निर्देशक तथा शोधकर्ता के रूप में कार्य करते हुए संगीत जगत में अपनी पहचान स्थापित करते हैं। इसके अतिरिक्त निजी संगीत विद्यालयों और प्रशिक्षण केंद्रों के संचालन से भी स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर उत्पन्न होते हैं। वर्तमान समय में विद्यालयी शिक्षा में भी संगीत को एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में स्थान दिया जा रहा है। उत्तर प्रदेश के अनेक सरकारी और निजी विद्यालयों में संगीत शिक्षकों की नियुक्ति की जाती है, जिससे इस क्षेत्र में रोजगार की संभावनाएँ बढ़ती हैं। इस प्रकार संगीत शिक्षा संस्थान न केवल सांगीतिक ज्ञान के प्रसार में सहायक हैं, बल्कि वे क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में भी अप्रत्यक्ष रूप से योगदान देते हैं।

### सांस्कृतिक पर्यटन और संगीत:-

संगीत और पर्यटन के मध्य एक घनिष्ठ संबंध विद्यमान है। उत्तर प्रदेश के अनेक धार्मिक तथा सांस्कृतिक नगरों में आयोजित होने वाले सांगीतिक उत्सव और कार्यक्रम देश-विदेश के पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। इन आयोजनों के माध्यम से न केवल संगीत की विविध विधाओं का प्रस्तुतीकरण होता है, बल्कि राज्य की सांस्कृतिक परंपराओं का व्यापक परिचय भी मिलता है। वाराणसी में आयोजित होने वाले संकट मोचन संगीत समारोह, ध्रुपद मेला तथा काशी गंगा महोत्सव जैसे कार्यक्रम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इसी प्रकार अयोध्या में दीपोत्सव के अवसर पर विभिन्न सांस्कृतिक और सांगीतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त आगरा महोत्सव, मेरठ महोत्सव, गोरखपुर महोत्सव तथा वृंदावन और मथुरा क्षेत्र में होने वाले धार्मिक आयोजनों में भी संगीत का महत्वपूर्ण स्थान होता है। इन सांस्कृतिक आयोजनों में देश और विदेश से अनेक पर्यटक तथा कला-प्रेमी भाग लेते हैं। इसके परिणामस्वरूप पर्यटन गतिविधियों में वृद्धि होती है, जिससे होटल, परिवहन, स्थानीय व्यापार तथा हस्तशिल्प उद्योग को भी आर्थिक लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार संगीत सांस्कृतिक पर्यटन को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को भी सुदृढ़ बनाने में सहायक सिद्ध होता है।

### क्षेत्रीय संगीत उद्योग का विकास एवं डिजिटल माध्यम:-

वर्तमान समय में उत्तर प्रदेश में क्षेत्रीय संगीत उद्योग का विस्तार उल्लेखनीय रूप से देखा जा रहा है। विशेष रूप से भोजपुरी संगीत ने व्यापक लोकप्रियता प्राप्त करते हुए एक सशक्त सांगीतिक और व्यावसायिक क्षेत्र के रूप में अपनी पहचान बनाई है। भोजपुरी गीतों के निर्माण, प्रस्तुति और प्रसार में अनेक गायक, संगीतकार, वादक, तकनीशियन तथा मीडिया से जुड़े लोग सक्रिय रूप से कार्य कर रहे हैं। इस प्रक्रिया ने क्षेत्रीय स्तर पर एक ऐसे सांगीतिक परिवेश को जन्म दिया है, जिसमें कलाकारों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के साथ-साथ आर्थिक अवसर भी प्राप्त होते हैं। क्षेत्रीय संगीत उद्योग के विस्तार में रिकॉर्डिंग स्टूडियो, वीडियो निर्माण तथा डिजिटल वितरण से जुड़े क्षेत्रों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इन गतिविधियों के कारण संगीत के निर्माण और प्रस्तुति की प्रक्रिया पहले की अपेक्षा अधिक व्यापक और संगठित हुई है। इसके परिणामस्वरूप कलाकारों को अपनी रचनाओं को प्रस्तुत करने के लिए नए मंच प्राप्त हुए हैं और सांगीतिक गतिविधियों का दायरा भी विस्तृत हुआ है। आधुनिक तकनीक और डिजिटल माध्यमों ने इस परिवर्तन को और

अधिक गति प्रदान की है। इंटरनेट और सोशल मीडिया के माध्यम से कलाकार अपनी रचनात्मक अभिव्यक्तियों को सीधे श्रोताओं तक पहुँचा पा रहे हैं। यूट्यूब और अन्य ऑनलाइन मंचों के माध्यम से क्षेत्रीय संगीत अब स्थानीय सीमाओं से निकलकर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुँच रहा है। इसके कारण अनेक स्वतंत्र कलाकारों को भी अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर प्राप्त हुआ है। डिजिटल मंचों के माध्यम से संगीत के प्रसार ने कलाकारों के लिए आय के नए स्रोत भी उपलब्ध कराए हैं। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर गीतों की लोकप्रियता के आधार पर कलाकारों को आर्थिक लाभ प्राप्त होता है, जिससे क्षेत्रीय संगीत उद्योग को और अधिक प्रोत्साहन मिलता है। इस प्रकार आधुनिक तकनीक और डिजिटल माध्यमों के सहयोग से क्षेत्रीय संगीत उद्योग ने एक नए आयाम को प्राप्त किया है, जो न केवल सांगीतिक गतिविधियों को बढ़ावा देता है बल्कि क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को भी गतिशील बनाने में योगदान देता है।

### **निष्कर्ष:-**

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि उत्तर प्रदेश में संगीत केवल सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं है, बल्कि यह क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था से भी गहराई से जुड़ा हुआ है। राज्य की समृद्ध शास्त्रीय और लोक संगीत परंपराएँ यहाँ के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को सशक्त बनाने के साथ-साथ अनेक आर्थिक गतिविधियों को भी प्रभावित करती हैं। लोक संगीत परंपराओं, ग्रामीण सांस्कृतिक आयोजनों तथा विभिन्न सांगीतिक कार्यक्रमों के माध्यम से कलाकारों को प्रस्तुति के अवसर प्राप्त होते हैं, जिससे उनके लिए आय के स्रोत विकसित होते हैं। इसी प्रकार वाद्य निर्माण एवं मरम्मत से जुड़ा कारीगरी क्षेत्र भी अनेक कारीगरों के लिए आजीविका का महत्वपूर्ण साधन है। संगीत शिक्षा संस्थानों के माध्यम से विद्यार्थियों को व्यवस्थित प्रशिक्षण प्राप्त होता है, जिसके परिणामस्वरूप वे कलाकार, शिक्षक अथवा अन्य सांगीतिक क्षेत्रों में कार्य करते हुए रोजगार के अवसर प्राप्त करते हैं। इसके अतिरिक्त सांस्कृतिक पर्यटन, क्षेत्रीय संगीत उद्योग तथा डिजिटल माध्यमों के विस्तार ने संगीत की आर्थिक संभावनाओं को और अधिक व्यापक बनाया है। इन सभी पक्षों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि उत्तर प्रदेश की क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में संगीत एक महत्वपूर्ण आर्थिक-सांस्कृतिक घटक के रूप में कार्य करता है, जो सांस्कृतिक संरक्षण के साथ-साथ रोजगार और आर्थिक गतिविधियों को भी प्रोत्साहित करता है।

### **संदर्भ ग्रंथ सूची:-**

1. भातखंडे, वि० ना०, हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति (भाग 1-4), संगीत कार्यालय, लखनऊ, 1990.
2. चौरसिया, ओ० पी०, भारतीय संगीत का इतिहास, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2002.
3. श्रीवास्तव, अशोक कुमार, भारतीय लोक संगीत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010.
4. Deva, B. C., An Introduction to Indian Music, Publications Division, Government of India, New Delhi (1995).
5. Ranade, A. D., Music Contexts: A Concise Dictionary of Hindustani Music, Promilla & Co. Publishers, New Delhi (2006).
6. Vatsyayan, Kapila, The Square and the Circle of the Indian Arts, Abhinav Publications, New Delhi, (2007).